मशीनवाला हाथी

मंजुश्री मिश्र

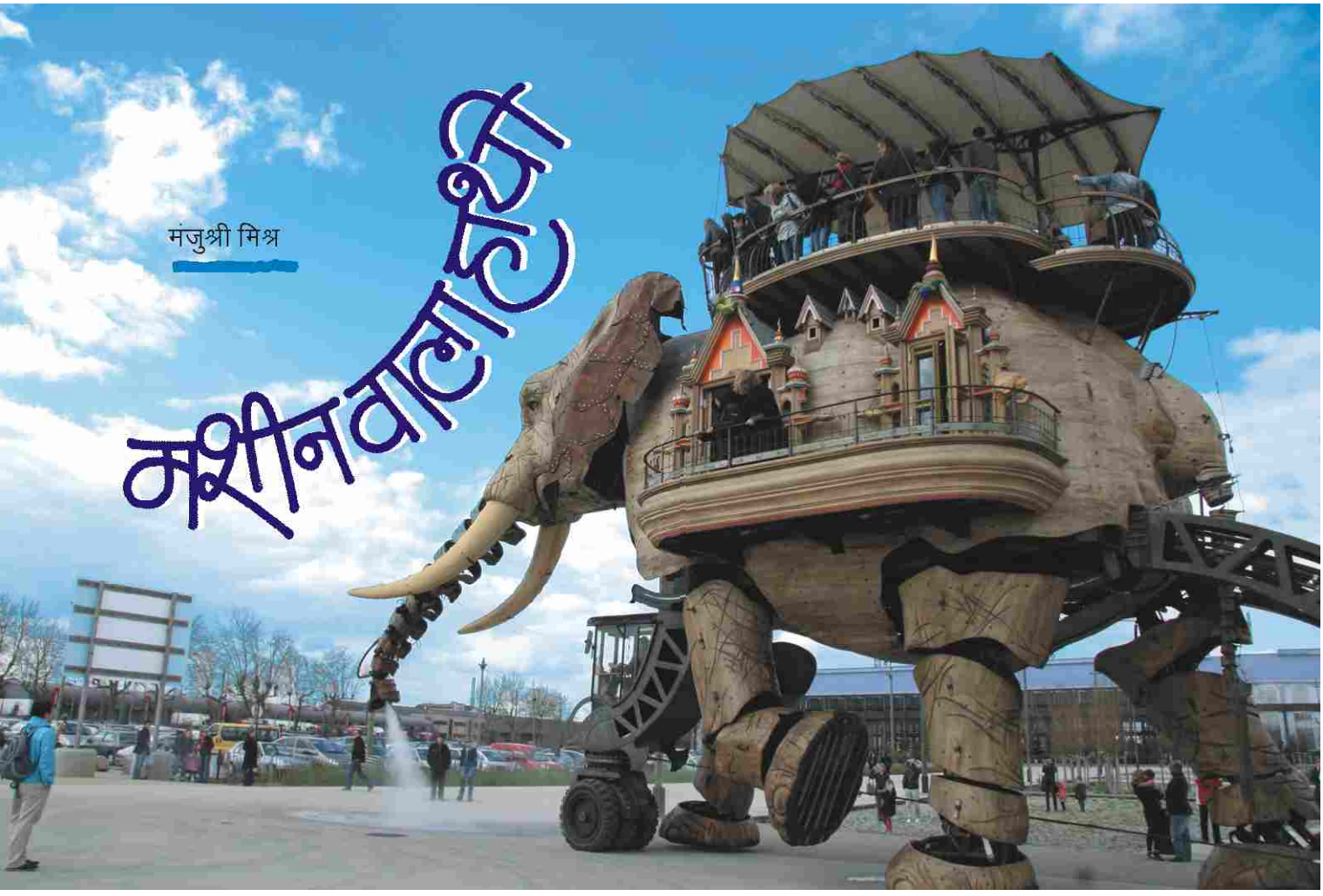

यह हाथी न तो किसी चिड़ियाघर में है, न किसी सर्कस में। जंगल में भला मशीनी हाथी क्या करेगा? यह अनोखा हाथी एक संग्रहालय (म्यूज़ियम) में है। सात समुन्दर पार यूरोप के एक देश फ्रांस में।

हाथी संग्रहालय में!

फ्रांस में लॉरी नदी के किनारे बसा एक सुन्दर, शान्त, छोटा-सा शहर है – नॅन्त। इस शहर के पास से होती हुई लॉरी नदी अटलांटिक महासागर में मिलती है। पहले यहाँ पानी के बड़े-बड़े जहाज़ बनते थे। लेकिन अब वह ज़माना बीत गया। तब के बड़े जहाज़ आज कोई काम के नहीं रहे। तो नगरपालकों को लगा कि क्यों ना पुरानी मशीनों से बच्चों के लिए एक संग्रहालय बनवाया जाए!

यह संग्रहालय 7 फरवरी 2009 को खुला। हमारा यह भारी-भरकम हाथी यहीं खड़ा है। दिन में दो-चार बार यह झूमते-झामते बाहर निकलता है। और पास के बड़े मैदान में चक्कर लगाकर वापिस अपने मंडप के नीचे आकर आराम करता है।

हड्डी – लोहा-लकड़ी, माँस – चमड़ा

तीन मंज़िले इस विशालकाय हाथी को बनाने के लिए लोहे, लकड़ी और चमड़े का इस्तेमाल किया गया है। हाथी के सूपे जैसे कान चमड़े के बड़े-बड़े टुकड़ों को मोटी कीलों से जोड़कर बनाए गए हैं। उसका शरीर हाथी के रंग की लकड़ी के टुकड़ों को जोड़-जोड़कर बनाया है। लम्बी सूँड, सुन्दर पूँछ और मज़बूत पैर भी लकड़ी के न जाने कितने टुकड़ों को जोड़कर तैयार किए

किनारे की ओर बैठने के लिए एक-दो बैंचें भी लगी हैं। हाथी का यह पूरा ढाँचा एक बड़ी ट्रकनुमा मशीन पर टिका है। हाथी के अगले पाँवों के बीच में तीन बड़े पहिए लगे हैं। पूँछ के पीछे दो मज़बूत पहिए हैं। एकदम असली दिखने वाला यह नकली हाथी इन्हीं पहियों के सहारे चलता है।

म्यूज़ियम में ढेर सारे मॉडलों और चित्रों में इस हाथी के बनने की पूरी प्रक्रिया दिखाई गई है। हाथी के अलावा यहाँ मशीन से चलने वाली मछली, मगर, केकड़ा आदि भी बनाए जा रहे हैं। ये सब भी मोटर की सहायता से आगे-पीछे होते हैं, आँखें खोलते-

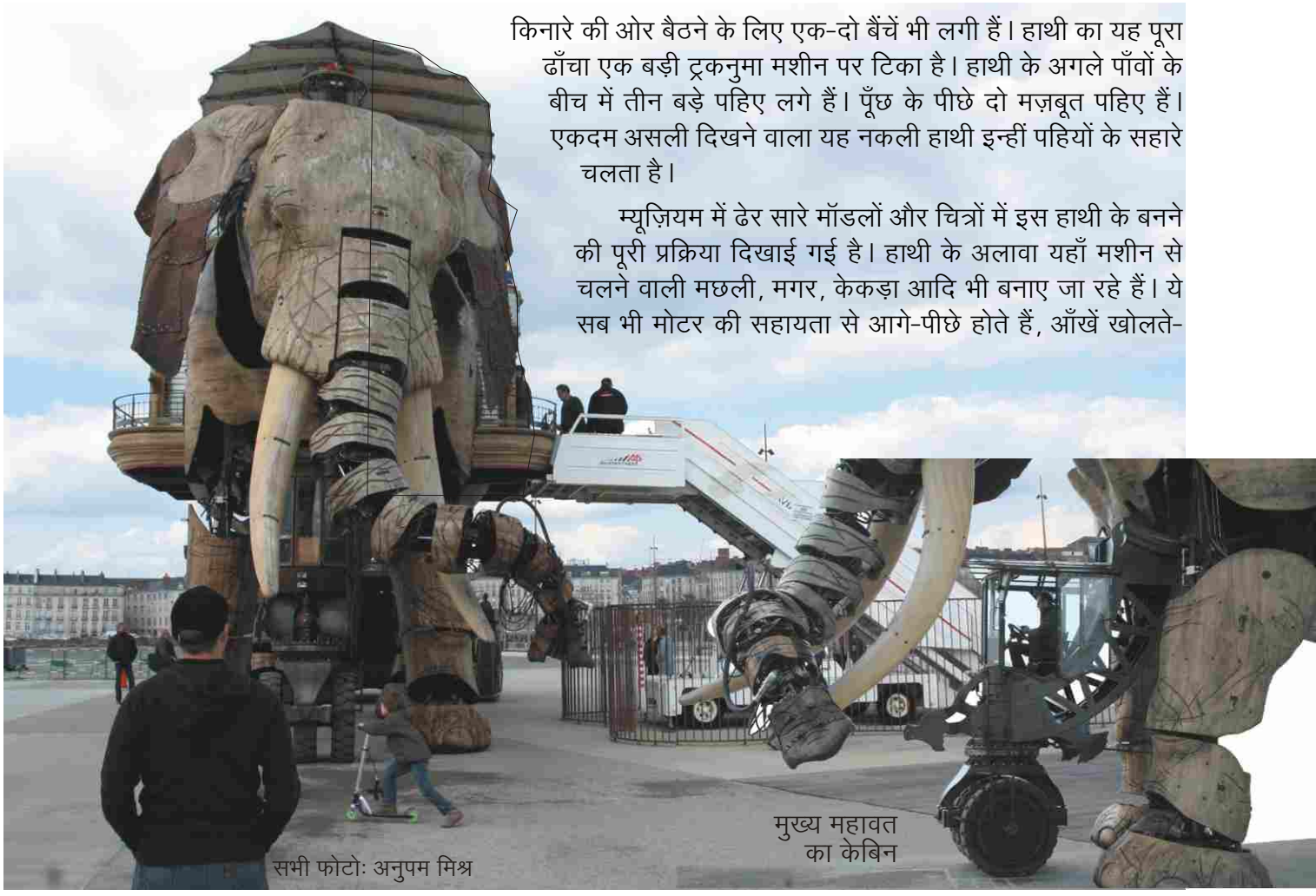

सभी फोटोः अनुपम मिश्र

मुख्य महावत का केबिन

गए हैं। सफेद रंग की लकड़ी से बने उसके दो सफेद दाँत उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं। आँखें तो इसकी गज़ब की हैं। आँखों की पुतलियाँ भारी-भरकम सिर के साथ हिलती हैं, उसकी पलकें झपकती हैं तो लगता है कि सामने जुटी भीड़ में वे हमको-तुमको खोज रही हैं।

इसके इस विशाल शरीर के ऊपर लकड़ी का बहुत सुन्दर दो मंज़िल का हौदा है। इस हौदे में

बन्द करते हैं, ज़ोर से फुँफकारते हैं, मुँह से पानी बाहर फेंकते हैं आदि।

इस मशीनी हाथी के विशाल हौदे में छोटे-बड़े मिलाकर लगभग पचास लोग बैठते हैं। हौदे पर चढ़ने-उतरने के लिए हवाई जहाज़ में लगने वाली सीढ़ियों का उपयोग किया जाता है।

महावत भी एक नहीं तीन-तीन हैं। हाथी मशीनी है तो महावत भी तो वॉकी-टॉकी, वायरलैस वाले होंगे! मुख्य महावत पूरे हाथी को कई तरह के गियर, लीवर के सहारे चलाता है। एक सहायक महावत हौदे पर और दूसरा सहायक वॉकी-टॉकी लिए नीचे मैदान में तैनात रहता है। मुख्य महावत तरह-तरह के बटन दबाता है, गेयर बदलता है, लीवर घुमाता है, एक्सीलेटर दबाता है। इन्हीं के सहारे हाथी अपने बड़े-बड़े कान हिलाता है, सूँड हिलाता-डुलाता है, पूँछ फटकारता है, आँखें मटकाता है, झूमता है और सचमुच के हाथी की तरह बड़ी शान से एक-एक कदम उठाकर बड़े मैदान का चक्कर लगाता है। बीच-बीच में चिंघाड़ता है और ज़ोर-ज़ोर से पादता भी है! अपनी सूँड से पानी की पिचकारी भी आसपास के लोगों पर छोड़ता है।

बच्चे माँ-बाप सहित इस पर सवारी कर सकते हैं। आधे-घण्टे की सवारी के 400 रुपए लगते हैं। इतने में तो अपने घरों के कितने सारे ज़रूरी काम निपट जाएँ!